ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

सामवेद अथर्ववेद

वेदाङ्ग

(वेदों से ज्ञान)

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी – प्रचार कमीटी

पी. ओ. बोक्स ४२४५, सामाबूला

फोन / फेक्स ३८६०४४

अप्रेल – जून प्रकाशन २०००

अंक २५

संस्कार

पिछले अंक से आगे

विवाह संस्कार

सप्तपदी का सन्देश –

वर कहता है –

ओ इषे एकपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूस्ते सन्तु जरदष्टय: ॥ अश्वालायन १।७।१९

१. इषे– सबसे पूर्व अन्न प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना। गृहस्थ के लिए अन्न सबसे पहली आवश्यकता है। बिना अन्न के गृहस्थाश्रम चल नहीं सकता। अन्न के अभाव में न अपना पोषण हो सकेगा न अतिथियों की सेवा और न अन्य धर्म कार्य ही सम्भव हो सकेंगे। दरिद्रता पाप की जननी है अत: अन्न प्राप्ति आवश्यक है।

मन्त्र में दूसरी बात कही है – तू मेरी अनुव्रता हो। व्रत का अर्थ है सत्य और धर्मयुक्त नियम एवं सकल्प। पापाचरण का नाम व्रत नहीं है। जो लोग ऐसा कहते हैं कि पति की आज्ञा चाहे कितनी ही पापयुक्त हो उसे मानना ही चाहिए वे व्रत शब्द का अर्थ नहीं जानते।

तीसरी बात है – धर्म पालन में परमपिता परमात्मा तेरी सहायता करे।

चौथी बात है – हम दोनों मिलकर सन्तानों को प्राप्त करें जो वृद्ध अवस्था में हमारी सहायता करें।

२. ऊर्जे – दूसरे मन्त्र में और सब बातें तो वे ही हैं, किन्तु शारीरिक बल की बात विशेष है। खाने की सामग्री बल, पराक्रम और प्राणशक्ति देने वाली हो। भोजन स्वाद प्रधान न होकर पुष्टिकारक होना चाहिए।

३. रायस्पोषाय – गृहस्थ के लिए धन की महती आवश्यकता है। धन के अभाव में न यज्ञ हो सकेंगे और न बच्चों का लालन- पालन। धन से ही धर्म का अनुष्ठान होता है और उससे सुख की प्राप्ति होती है अत: गृहस्थ को सत्य एवं न्यायपूर्ण उपायों से धन-प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करना चाहिये।

४. मयोभवाय – सुख गृहस्थ का प्राण है। यदि गृहस्थ में सुख नहीं तो वह निष्प्राण है, मुर्दा है अत: चौथे पग में सुख-प्राप्ति की ओर ध्यान दिलाया गया है। धन-धान्य होने पर भी यदि घर में सुख नहीं हो तो ऐसा धन व्यर्थ है। धन कमाओ परन्तु अपने स्वास्थ्य को समाप्त करके नहीं। स्मरण रखो धन आपको रोटी दे सकता है भूख नहीं। धन आपको बढ़िया से बढ़िया पलंग और गद्दे दे सकता है नींद नहीं। धन वस्त्र दे सकता है परन्तु शारीरिक सौन्दर्य नहीं।

५. प्रजाभ्य: – एक घर में यज्ञों का अनुष्ठान होता है, धन-धान्य बहुत है, हर प्रकार का सुख भी है परन्तु सन्तान नहीं है तो वह घर सुनसान ही है। गृहस्थ का मुख्य उद्देश्य सुसन्तान का निर्माण करना है। विवाह का उद्देश्य भोग नहीं है क्योंकि जो राष्ट्र विवाह की शय्या को केवल भोग विलास का साधन समझता है, वह जीवित नहीं रह सकता, उसका पतन अवश्यम्भावी है।

६. ऋतुभ्य: – ऋतुभ्य: शब्द यह संकेत कर रहा है कि स्वास्थ्य रक्षा के लिए हम सब कार्य ऋतु =समय पर करें। हमारी प्रत्येक क्रिया ठीक स्थान और ठीक समय पर हो। हमारी दिनचर्या और जीवनचर्या समय के अनुकूल हो।

७. मित्रता– गृहस्थ में हम दोनों मित्रता का व्यवहार करेंगे। **नास्ति भार्या समो बन्धु:** – संसार में स्त्री के समान और कोई बन्धु नहीं है अत: दम्पती में मित्रभावना होनी ही चाहिए।

प्रत्येक गृहस्थ को इन की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। इन सात पदार्थों का जो क्रम रखा गया है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि पहली की अपेक्षा दूसरा, दूसरे की अपेक्षा तीसरा, इसी प्रकार सातवां पग सब से अधिक पुरुषार्थ की अपेक्षा रखता है।

इन सात बातों के घर में होने से हमारे घर स्वर्ग बन जायेंगे।

(१५) हृदय स्पर्श

वर –वधू दक्षिण हाथ से एक दूसरे के हृदय का स्पर्श करके निम्न मन्त्र का उच्चारण करते है –

ओम् मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु महयम् ॥ पार. १।८।८

हे वधू ! मैं तेरे अन्त: करण और आत्मा को अपने हृदय में धारण करता हूं। तुम्हारा चित्त सदा मेरे चित्त के अनुकूल रहे। मेरी वाणी को तुम एकाग्रचित्त से श्रवण किया करो। प्रजापति परमात्मा तुम्हें मेरे लिए नियुक्त करे।

इसी प्रकार वधू भी कहे– हे प्रिय स्वामिन् ! आपके हृदय, आत्मा और अन्त: करण को मैं अपने हृदय में धारण करती हूं। आपका चित्त सदा मेरे चित्त के अनुकूल रहे। आप मेरी बात को एकाग्रचित्त से श्रवण किया करें। आज से परमात्मा ने आपको मेरे अधीन किया है।

(१६) आशीर्वाद

हृदय स्पर्श के पश्चात् वर वधू के मस्तक पर हाथ रख, सभी उपस्थित जनों से प्रार्थना करता है –

हे उपस्थित जनों ! यह वधू अत्यन्त मङ्गलकारिणी है। आप सब मिलकर इसे कृपादृष्टि से देखो तथा इसे सौभाग्यसूचक आशीर्वाद देकर अपने-अपने घर को जाओ। परन्तु विशेष रूप से पराङ्मुख होकर मत जाओ अपितु पुत्रादि के मङ्गल की आशा से फिर भी आते रहो।

वर की प्रार्थना पर सब उपस्थित जन –"ओम् सौभाग्यमस्तु। ओ शुभ भवतु"।

इन वाक्यों से आशीर्वाद देते हैं।

तत्पश्चात् स्विष्टकृत और व्याहृति आहुतियों के साथ पूर्ण विधि समाप्त होती है।

अगला विषय वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम